# अध्याय–पंचम

# शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

# अध्याय–पंचम

# शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

## 5.1 प्रस्तावनाः–

शिक्षा सतत प्रक्रिया है जो जीवंतपर्यन्त अनुभव के साथ चलती रहती है। अनुभव मापन में गुणात्मकता लाने एवं सर्वांगिन विकास करने हेतु शिक्षा के क्षेत्र में अनेक नये नये प्रयास किए जा रहे है। इनमें CBSE का सतत एवं व्यापक मूल्यमापन (परीक्षा सुधार) एक अमूलाग्र परिवर्तन है। जो कि मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा शिक्षा के अधिकार में सर्व शिक्षा अभियान अंतर्गत शिक्षा का सार्वभौमिकरण एवं गुणात्मक विकास एक अभिनव उपक्रम रूप में चलाया जा रहा है। यह CCE एक ऐसा प्रयास है जिसमें विद्यार्थियों का शाला के पहले दिन से लेकर आखरी दिन तक सतत एवं व्यापक मूल्यमापन होता है।

इस नई प्रणाली विषयी केन्द्र सरकार द्वारा क्रियान्वित नई विधा को महाराष्ट्र राज्य सरकार ने सत्र 2010 में शालेय गतिविधियों में स्वीकृत किया है। तत्पश्चात अध्यापकों को CCE पर प्रशिक्षण दिया गया। महाराष्ट्र राज्य शैक्षिक संशोधन प्रशिक्षण परिषद पुणे 30 द्वारा CCE अध्यापक मार्गदर्शन पुस्तिका दी गई। इस प्रशिक्षण में सतत एवं व्यापक मूल्यामापन संकल्पना, निर्माणात्मक, संकलनात्मक मूल्यमापन सुधारात्मक, उपचारात्मक शिक्षण, नव रचना तथा श्रेणी पद्धति का परीक्षण दिया गया। प्रस्तुत अध्ययन में प्रशिक्षण पश्चात अध्यापकों की CCE संकल्पना की समझ ज्ञात करने का प्रयास किया है।

## 5.2 शोध कथन

" सर्व शिक्षा अभियान अंतर्गत सतत एवं व्यापक मूल्यमापन प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों की सतत एवं व्यापक मूल्यमापन प्रति समझ एक अध्ययन"

## 5.3 शोध के चर

- स्वतंत्र चर- CCE प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापक।
- आश्रित चर - अध्यापक प्रशिक्षण, CCE के प्रति समझ।

## 5.4 शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. सतत एवं व्यापक मूल्यामापन प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों की सतत एवं व्यापक मूल्यामापन संकल्पना के प्रति समझ का अध्ययन करना।
2. निर्माणात्मक मूल्यमापन स्वरूप के संबध में प्रशिक्षित अध्यापकों के समझ का अध्ययन करना।
3. संकलनात्मक मूल्यमापन संबंध में प्रशिक्षित अध्यापकों की समझ का अध्ययन करना।
4. सुधारात्मक शिक्षण संबंध में प्रशिक्षित अध्यापकों की समझ का अध्ययन करना।
5. उपचारात्मक शिक्षण संबंध में प्रशिक्षित अध्यापकों की समझ का अध्ययन करना।
6. नवरचनावाद संदर्भ में प्रशिक्षित अध्यापकों की समझ का अध्ययन करना।
7. श्रेणी पद्धति के बारे में प्रशिक्षित अध्यापकों की समझ ज्ञात करना/अध्ययन करना।
8. सर्व शिक्षा अभियान अंतर्गत सतत एवं व्यापक मूल्यामापन प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों का लिंग के आधार पर समझ ज्ञात करना।

## 5.5 शोध प्रश्न-

1. सतत एवं व्यापक मूल्यामापन संकल्पना के प्रति सतत एवं व्यापक मूल्यामापन प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों की समझ क्या है?
2. निर्माणात्मक एवं संकलनात्मक मूल्यमापन के संबंध में प्रशिक्षित अध्यापकों का दृष्टिकोण क्या है?

3. सुधारात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण के संबंध में प्रशिक्षण अध्यापकों की क्या विचारधारा है?
4. नवरचनावाद के संदर्भ में प्रशिक्षित अध्यापकों की क्या विचारधारा है?
5. श्रेणी पद्धति के बारे में प्रशिक्षित अध्यापक क्या सोचते है?

## 5.6 परिकल्पना

सर्व शिक्षा अभियान अंतर्गत सतत एवं व्यापक मूल्यामापन प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों के लिंग के आधार पर सतत एवं व्यापक मूल्यामापन के समझ में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

## 5.7 अध्ययन की परिसीमाएँ–

- महाराष्ट्र राज्य के चंद्रपुर जिले के भद्रावती विभाग तक सीमित है।
- प्रदत्त का संकलन जिला परिषद के संस्थानिक के सरकार मान्य एवं अनुदानित प्राथमिक तथा माध्यमिक विद्यालय के CCE प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों द्वारा किया गया।
- प्रस्तुत अध्ययन में महाराष्ट्र राज्य के चंद्रपुर जिले के भद्रावती विभाग के 17 शाला के प्राथमिक एवं माध्यमिक अध्यापकों शामिल किया गया है।
- अध्ययन में प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के 120 CCE प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों को चयन किया गया है।
- अध्ययन में 60 अध्यापक एवं 60 अध्यापिका का चयन किया गया है।

## 5.8 न्यादर्श का चयन

प्रस्तुत शोध अध्ययन में समष्टि सीमांकन करके यादृच्छिक विधि, द्वारा महाराष्ट्र राज्य के चंद्रपुर जिले के भद्रावती विभाग का चयन किया गया है। जिसमें शासकीय एवं अनुदान प्राप्त 17 विद्यालयों का समावेश किया गया।

सतत एवं व्यापक मूल्यामापन प्रशिक्षण प्राप्त 120 अध्यापकों का समावेश किया गया जिसमें 60 अध्यापक एवं 60 अध्यापिका है।

❖ **प्रदत्तों का संकलनः–**

प्रयुक्त उपकरणों का प्रशासन इस प्रकार किया गया –

- प्रथम चन्द्रपुर जिला शिक्षा केन्द्र द्वारा सर्व शिक्षा अभियान विकास केन्द्र से संपर्क कर अनुमति प्राप्त की गई।
- तत्पश्चात जिला SSA के विभाग प्रमुख से SSA की जानकारी प्राप्त की गई।
- भद्रावती विभाग के SSA कार्यालय से संपर्क कर CCE प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों के नाम शाला के नाम की सूची ली गई।
- प्रत्यक्ष शाला में जाकर प्रधानाचार्य से संपर्क कर CCE प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों से प्रश्नावली भरने हेतु अनुमती प्राप्त की गई।
- तत्पश्चात CCE प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों से CCE संकल्पना विषयी उनकी समझ ज्ञात करने हेतु प्रश्नावली भरवाई गई।
- प्रधानाध्यापक एवं अध्यापकों से प्रश्नावली को सफलता पूर्वक प्राप्त हो जाने के पश्चात् धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

## 5.9 शोध उपकरण –

शोध में प्रदत्तों का संकलन करने हेतु उपकरणों की आवश्यकता होती है जिसमें प्रदत्तों के विश्लेषण तथा व्याख्या करने में सरलता हो। उपकरण स्वनिर्मित है तो उसका विश्वसनीय एवं उद्देश्यपूर्ण होना आवश्यक है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में विशेषज्ञों के परामर्श से प्रश्नावली शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित है। जो महाराष्ट्र राज्य शैक्षणिक संशोधन व प्रशिक्षण परिषद पुणे–30 द्वारा (सातत्यपूर्ण सर्वकष मूल्यमापन) सतत एवं व्यापक मूल्यमापन अध्यापक मार्गदर्शिका से 30 प्रश्नों का निर्माण किया गया है। प्रश्नावली का स्वरूप आवश्यकतानुसार ऐच्छिक उत्तरों के रूप में है।

## 5.10 शोध प्रविधि :-

शोध अध्ययन हेतु वर्णनात्मक अनुसंधान के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

## 5.11 प्रदत्तों का व्यवस्थापन तथा प्रयुक्त सांख्यिकी प्रविधियाँ

प्रदत्तों के संकलन हेतु प्रश्नावली का उपयोग किया गया। प्रश्नावली अनुच्छेद रूप में निर्माण की गई।

प्रदत्तों के व्यवस्थापन में प्रश्नों को अंक प्रदान करने के पश्चात् अध्यापकों की समझ ज्ञात करने हेतु प्रतिशत सांख्यिकी का उपयोग किया गया। तथा अंतर ज्ञात करने हेतु 'टी' परीक्षण सांख्यिकी का प्रयोग किया गया। अध्यापकों के लिंग के आधार पर समझ ज्ञान करने हेतु मध्यमान मानक विचल तथा 'टी' मान का प्रयोग किया गया।

## 5.12 निष्कर्ष

**उद्देश्य-1**

CCE प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों की CCE संकल्पना की कुल योग में 76.91 प्रतिशत समझ है। उसमें 77.66 प्रतिशत अध्यापक तथा 76.16 प्रतिशत अध्यापिका में CCE संकल्पना की समझ है।

**उद्देश्य-2**

निर्माणात्मक मूल्यमापन संबंध में प्रशिक्षित शिक्षकों की कुल योग में 83.08 प्रतिशत समझ है जिसमें 82.5 प्रतिशत अध्यापक तथा 83.66 प्रतिशत अध्यापिकाओं की समझ है।

**उद्देश्य-3**

संकलनात्मक मूल्यमापन संबंध में प्रशिक्षित शिक्षकों की कुल योग में 55.83 प्रतिशत समझ ज्ञात हुई हैं इसके अंतर्गत 84.48 प्रतिशत अध्यापक तथा 87.43 प्रतिशत अध्यापिकाओं की समझ ज्ञात हुई है।

उद्देश्य–4

सुधारात्मक शिक्षण संबंध में प्रशिक्षित शिक्षकों की कुल योग में 84. 37 प्रतिशत समझ ज्ञात हुई है। जबकि इसमें 85.83 प्रतिशत अध्यापक एवं 82.91 प्रतिशत अध्यापिका की समझ ज्ञात हुई है।

उद्देश्य–5

उपचारात्मक शिक्षण संबंध में प्रशिक्षित शिक्षकों की कुल योग में 85. 40 प्रतिशत की समझ है जिसमें 90.90 प्रतिशत अध्यापक एवं 95.45 प्रतिशत अध्यापिका को उपचारात्मक शिक्षण संबंध समझ है।

उद्देश्य–6

नवरचनावाद संदर्भ में प्रशिक्षित शिक्षकों की कुल योग के 70.27 प्रतिशत समझ है जिसमें 67.5 प्रतिशत अध्यापक एवं 73.05 प्रतिशत अध्यापिकाओं की समझ है।

उद्देश्य–7

श्रेणी पद्धति के संबंध में प्रशिक्षित शिक्षकों की कुल योग के 72.08 प्रतिशत समझ है। जिसमें 71.66प्रतिशत अध्यापक एवं 72.5 प्रतिशत अध्यापिकाओं की समझ है।

परिकल्पना–1

सर्व शिक्षा अभियान अंतर्गत सतत एवं व्यापक मूल्यामापन प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों के लिंग के आधार पर सतत एवं व्यापक मूल्यामापन की समझ में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

❖ **शोध विषय का शैक्षिक महत्व –**

शिक्षा मानव व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है। शिक्षा विकास में महाराष्ट्र राज्य शैक्षिक संशोधन व प्रशिक्षण परिषद पुणे ज्ञान एवं कौशल्य में परिवर्तन लाने के लिए प्रशिक्षण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। जिसमें नई परीक्षा सुधार (CCE) सतत एवं व्यापक मूल्यमापन संकल्पना एक है। यह प्रणाली अधिक क्लिष्ट स्वरूप की है।

CCE में निर्माणात्मक, संकलनात्मक मूल्यमापन, सुधारात्मक, उपचारात्मक शिक्षण, नवरचनावाद तथा श्रेणी पद्धति का प्रशिक्षण शिक्षकों को दिया गया क्या वाकहीं यह शिक्षण के बिन्दू अध्यापकों की समझ में आए है। क्योंकि अध्यापक ही शिक्षा का आधार होता है। संपूर्ण शिक्षा प्रणाली प्रक्रिया में वह महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शासकीय स्तर की योजना उसे समझ में आयी है तो वह उसे ठीक ढंग से क्रियान्वित कर सकेगा नहीं तो वह योजना कदापि सफल नही हो सकती।

इस शोध अध्ययन द्वारा उन सभी शैक्षिक बिन्दूओं के समझ संबंधी सुझाव दिये गये है। यदि अध्यापक स्वयं अपनी शैक्षिक कौशल्य एवं व्यवसाय के प्रति कर्तव्यनिष्ठ एवं जागरूक है तो वह शैक्षिक उद्देश्य की प्राप्ती कर विद्यार्थीयों के सर्वांगिंन विकास में आने वाले भविष्य की चुनोतियों का सामना करने में विद्यार्थियों को मार्ग पदप्रस्थ कर सकता है।

इस दिश में यह शोध कार्य एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है। यह शेध अध्ययन वर्तमान में CCE द्वारा विद्यार्थी के सर्वांगिंन विकास के रूप में सहायक है और अध्यापक अपने व्यवसाय के प्रति एकनिष्ठ तथा शासन के शिक्षा के संवैधानिक प्रावधान आधारित, समता आधारित, गुणात्मक सुधार हेतु CCE प्रशिक्षण अध्यापक, विद्यार्थी के विद्यालयीन गतिविधि पर पडने वाले प्रभाव को स्पष्ट करने में सहायक है।

## 5.13 सुझावः-

शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन क्षेत्र में प्राप्त किए गए निष्कर्ष के आधार पर निम्नांकित सुझाव दिये जा सकते है।

### ❖ अध्यापकों हेतु सुझाव

- अध्यापक ने स्वयं प्रेरणा से शासन के नवीन उपक्रम को क्रियान्वित करने का प्रयास करना चाहिए।
- अध्यापकों ने व्यवसायिक कौशल्य विकास हेतु विषय के शिबिर एवं सेवा अंतर्गत प्रशिक्षण को उपस्थित रहना चाहिए।

- अध्यापन एवं क्रियान्वय में होने वाली कठिनाई का निवारण करने हेतु अध्यापकों को योग्य मार्ग दर्शन लेने का प्रयास करना चाहिए।
- विद्यालय मे प्रत्येक दिन उपस्थित रहना चाहिए।
- प्रशिक्षण में जो विशिष्ट बिन्दू समझ में नहीं आये उन्हें प्रशिक्षण में ही बताना चाहिए।
- प्रधानाचार्य का काम है कि उनके यहाँ जितने भी अध्यापक है वह नियमित रूप से शालेय गतिविधि में पूर्णरूप से सहभागी है या नहीं इसका नियमितरूप से निरीक्षण करें।
- जिला परिषद शालाओं के अध्ययनरत विद्यार्थी को शिक्षा का महत्व समझाये ताकि विद्यार्थी नियमित रूप से पढाई कर सके।
- अभिभावकों से प्रत्यक्ष संपर्क कर उन्हें शिक्षा की उपयोगिता समझाये एवं विद्यार्थी प्रगति हेतु उनका सहयोग ले।
- अध्यापक CCE योजना को अमल नहीं कर पाए तो छात्रों के लिए भविष्य की प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार होना मुश्किल हो जायेगा, इसलिए CCE को अमल करना जरूरी है।
- अध्यापकों ने शिक्षा के गुणात्मक विकास हेतु सकारात्मक दृष्टिकोण का स्वीकार करना चाहिए।
- हर अध्यापक को CCE की समझ होना आवश्यक है।

❖ शासन हेतु सुझाव

- अध्यापकों को CCE की प्रविधि से अवगत कराने के लिये उन्हें उचित प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है। इस कार्य के लिए शिक्षाविदों तथा एन. सी.ई.आर.टी. के विशेषज्ञों एवं तज्ञों की सहायता ली जा सकती है।
- CCE की समझ जानने हेतु राज्य के प्रत्येक जिले में कम से कम एक अध्ययन किए जाने की आवश्यकता है।
- CCE प्रभावशाली ढंग से तभी लागू हो सकता है, यदि इसे विभिन्न चरणों में तथा विभिन्न स्तरों पर निर्धारित समय में कार्यन्वित किया जाये।

- प्रशिक्षण पश्चात निश्चित योजना बनाकर निरन्तर अनुवर्ती कार्यवाही (Fallow up action) की आवश्यकता है। अन्यथा निर्धारित वांछित सुधार होने में अनेक बाधायें आ सकती है।
- प्रशिक्षण की अवधि बढानी चाहिए।
- प्राथमिक अध्यापकों को अध्यापन के अतिरिक्त अन्य कार्य नहीं देना चाहिए।
- प्रशिक्षण निरंतर (सतत) देना चाहिए।
- कक्षा में विद्यार्थियों की संख्या निश्चित करनी चाहिए ताकि निर्माणात्मक मूल्यमापन ठीक ढंग से हो सके। अधिक विद्यार्थी संख्या का मूल्यमापन उचित प्रकार से करने में कठिनाई होती है।
- विद्यालय में मूल्यमापन संबंधी साधन एवं तंत्रों को उपलब्ध कराना चाहिए।
- प्रशिक्षण का कक्षा अध्ययन एवं विद्यालयीन गतिविधियों पर प्रभाव देखने हेतु शासन द्वारा नियमित निरीक्षण एवं पर्यवेक्षण करना की आवश्यकता है।
- CCE विषय के कठिन घटकों का अध्ययन करने हेतु अध्ययन- अध्यापन कार्यक्रम प्रशिक्षण के माध्यम से विकसित कर सकते है।
- शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर या कक्षा निहाय विद्यार्थी एवं अध्यापकों को CCE में आने वाली कठिनाई का सुधारने हेतु आवश्यकता है।
- विशिष्ट बालकों के लिए विशेष प्रशिक्षण की व्यवस्था करनी चाहिए।

## 5.14 भावी शोधार्थियों हेतु सुझाव

- CCE के विविध अध्ययन पद्धतियों का अवलंब करके उनके परिणामों का तुलनात्मक अध्ययन कर सकते है।
- 10+2 स्तर के CCE प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों के CCE की समझ का अध्ययन किया जा सकता है।
- CCE प्रशिक्षण का कक्षा अध्ययन पर प्रभाव एक अध्ययन किया जा सकता है।
- CCE नव उपक्रम से बालकों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
- NCERT और MSCERT स्तर पर हो रहे CCE अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता।